हिंदी अध्यापक संघ
VICTERS CLASS - 30/10/21
10th Hindi, Work sheet with notes
दिशाहीन दिशा

ക്ലാസ് കേൾക്കുന്നതിനു മുമ്പ് ഇതൊന്ന് ക്ലിക്ക് ചെയ്യൂ....

ക്ലാസ് കേൾക്കുന്നതിന് ഇവിടെ ക്ലിക്ക് ചെയ്യൂ.....

1, दिशाहीन दिशा किस विधा की रचना है ?
उत्तरः यात्रा वृत्त

2, दिशाहीन दिशा नामक यात्रा वृत्त के रचयिता कौन थे ?
उत्तरः मोहन राकेश

3, मोहन राकेश के बारे में आप क्या जानते हैं ?
उत्तरः हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार मोहन राकेश व्यास और नाटक के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्ध है।

4, शिमला के स्कूली दोस्तों में एक ने लेखक से कन्नूर के बारे में क्या कहा था ?
उत्तरः रहने के लिए कन्नूर अच्छी जगह है।

5, शिमला के स्कूली दोस्तों में किसी ने कोल्लम के बारे में लेखक से क्या कहा था ?
उत्तरः कोल्लम पहुंच जाने पर वहां हमसे और कहीं जाने का मन नहीं करेगा।

6, गोवा की क्या-क्या विशेषताएं बताई गई है ?
उत्तरः गोवा में गोवा समुद्र तट है प्राकृतिक रमणीय दा है जीवन बहुत सस्ता है।

7, शिमला कहां है ?
उत्तरः हिमाचल प्रदेश में।

8, घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप रेखा नहीं थी।" - लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जान से पहले यात्रा की रूप रेखा बनाना ज़रूरी है ?
उत्तरः किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूपरेखा बनाना ज़रूरी है। यात्रा तो हम नई जगहों को पहचानने के लिए करते हैं। रूपरेखा बनाने से जगहों की सही जानकारी मिलती

है. मसंदीदार जगह बड़ी चाव देख सकते हैं और अन्य जगह छोड़ भी सकते हैं। हम अपने समय का सही इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

9, घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के विशाल समुद्र-तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है ?
उत्तरः नुभवहीन बातों पर ज़्यादा रुचि रखना स्वाभाविक है। विपरीत के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही है। किसी तंग गली में जन्म लेने से कन्याकुमारी के विशाल तट में अपनापन का भाव जागृत होगा।

10, HW

संबंध पहचानें, सही मिलान करें ।	
समुद्र तटों के प्रति	अभी तक लेखक यात्रा न कर सके।
समय और साधन की कमी से	कि वहाँ जीवन बहुत सस्ता है।
हाथ में पैसा आने पर	कन्याकुमारी जाना चाहते हैं ।
गोआ इसलिए हम जा सकते हैं	लेखक ने यात्रा करने का निश्चय किया ।
मोहन राकेश अपनी यात्रा के अंत में	मोहन राकेश का विशेषण आकर्षण था।

रूपरेखा - ധാരണ
अशिथरता - ചാഞ്ചാട്ടം
अंदर - മനസ്സ്
धकेलना - തള്ളുക
तुरंत - പെട്ടെന്ന്
साधन - സാമഗ്രികൾ
सीधे - നേരിട്ട്
मन होना - ആഗ്രഹം തോന്നുക
सस्ता - വിലകുറഞ്ഞ
सुविधा - സൗകര്യം
आतमीयता - സ്വന്തമാണെന്നുള്ള ഭാവം
जगना - ഉണരുക
घनिष्ठ - ദൃഢമായ
संबंध - ബന്ധം
घने शहर - തിരക്ക് പിടിച്ച നഗരം
तंग गली - ഇടുങ്ങിയ തെരുവ്
विस्तार - വ്യാപ്തി, വിശാലമായ
आधार - അടിസ്ഥാനം
अंतिम पड़ाव - അവസാന താവളം

6:13 61%

दिशाहीन दिशा

यात्रा वृत्त

मोहन राकेश

घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप-रेखा नहीं थी। बस एक अस्थिरता ही थी जो मुझे अंदर से धकेल रही थी। समुद्र-तट के प्रति मन में एक ऐसा आकर्षण था कि मेरी यात्रा की कल्पना में समुद्र का विस्तार अनायास ही आ जाता था। बहुत बार सोचा था कि कभी समुद्र-तट के साथ-साथ एक लंबी यात्रा करूँगा, परंतु यात्रा के लिए समय और साधन साथ-साथ मेरे पास कभी नहीं रहते थे। उन दिनों नौकरी छोड़ दी थी और पास में कुछ पैसे भी थे। इसलिए मैंने तुरंत चल देने का निश्चय कर लिया। पहले सोचा कि सीधे कन्याकुमारी चला जाऊँ और वहाँ से रेल, मोटर या नाव, जहाँ जो मिले, उसमें पश्चिमी समुद्र-तट के साथ-साथ गोआ या बंबई तक की यात्रा करूँ। रास्ते में जहाँ मन हुआ, वहीं कुछ दिन रह जाऊँगा। शिमला में हमारे स्कूल में कई लोग दक्षिण भारत के थे। उनमें से एक ने कहा था कि रहने के लिए कण्णूर बहुत अच्छी जगह है। एक और का कहना था कि मैं एक बार कोल्लम पहुँच जाऊँ, तो वहाँ से और कहीं जाने को मेरा मन नहीं होगा। दिल्ली में एक मित्र ने कहा था कि पश्चिमी समुद्र-तट पर गोआ से सुंदर दूसरी जगह नहीं है। वहाँ खुला समुद्र-तट है, एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है और सबसे बड़ी बात यह है कि जीवन बहुत सस्ता है– रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोड़े पैसों में प्राप्त हो सकती है। मेरे लिए सभी जगहें अपरिचित थीं, इसलिए मुझे सभी में आकर्षण लग रहा था। कोचिन, कण्णूर, मंगलूर, गोआ। अलेप्पी के बैक वाटर्ज़ और नीलगिरि की पहाड़ियाँ। सबके प्रति मेरे मन में एक-सी आत्मीयता जागती थी। जैसे कि मेरा उन सब स्थानों से कभी का घनिष्ठ संबंध रहा हो।

"घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप-रेखा नहीं थी।" –लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप-रेखा बनाना ज़रूरी है?

सबसे अधिक आत्मीयता कन्याकुमारी के तट को लेकर महसूस होती थी। परंतु एक घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए व्यक्ति के लिए उस विस्तार के प्रति ऐसी आत्मीयता का अनुभव करने का आधार क्या हो सकता था? केवल विपरीत का आकर्षण?

घने शहर की छोटी-सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के विशाल समुद्र-तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है?

घर से चलते समय कुछ निश्चय नहीं था कि कब, कहाँ, कितने दिन रहूँगा। हाँ, चलने तक इतना निश्चय कर लिया था कि पहले सीधे कन्याकुमारी न जाकर बंबई होता हुआ गोआ चला जाऊँगा और वहाँ से कन्याकुमारी की ओर यात्रा प्रारंभ करूँगा। यह इसलिए चाहता था कि मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव कन्याकुमारी हो...।

★★★★★★

दिसंबर सन् बावन की पच्चीस तारीख। थर्ड क्लास के डिब्बे में ऊपर की सीट बिस्तर बिछाने को मिल जाए, वह बड़ी बात होती है। मुझे ऊपर की सीट मिल गई थी। सोच रहा था कि अब बंबई तक की यात्रा में कोई असुविधा नहीं होगी। रात को ठीक से सो सकूँगा। मगर रात आई, तो मैं वहाँ सोने की जगह भोपाल ताल की एक नाव में लेटा बूढ़े मल्लाह अब्दुल जब्बार से गज़लें सुन रहा था।

भोपाल स्टेशन पर मेरा मित्र अ
जो वहाँ से निकलने वाले एक हिंदी दै
संपादन करता था, मुझसे मिलने के लि
था। मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर